अनुलग्नक-1
विषय-5
कार्यकारिणी परिषद् - 11.02.2022

स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा (2022)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) पर आधारित

दिल्ली विश्वविद्यालय

स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा (2022)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) पर आधारित

दिल्ली विश्वविद्यालय

www.du.ac.in

अनुक्रम

विवरण	पृष्ठांक
प्राक्कथन	2
प्रस्तावना	3
पारिभाषिक संकेताक्षरों के लिए सन्दर्भसारणी	4
संकेताक्षर सूची	5
परिभाषाएं	5
उद्देश्य	10
स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा की विशेषताएं	11
योग्यता प्रकार और विश्वासमानांक (क्रेडिट) आवश्यकताएं	13
स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा एवं विन्यास	15
टिप्पणी	21
निदर्शन-1 : अध्ययन के बहुविषयक पाठ्यक्रमों हेतु प्रतिमान स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा	27
निदर्शन-2: एकाधिक मुख्य अनुशासनसहकृत अध्ययन पाठ्यक्रमों हेतु प्रतिमान स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा	32
समापन टिप्पणी	37
प्रतिपुष्टि प्रपत्र	37
राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रकोष्ठ के सदस्य	38
अनुवाद समिति	39

प्राक्कथन

मानव क्षमता का पूर्ण उपयोग करने और सर्वांगीण व्यक्तित्व से युक्त व्यक्तियों के विकास करने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उचित वातावरण प्रदान कर समावेशी और समानताकारी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सब तक पहुँचाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी) का निर्माण किया गया है। ऐसी शिक्षा में आजीवन सीखने, ज्ञान के नए क्षेत्रों के बारे में जागरूकता, आर्थिक विकास के लिए औद्योगिक मांगों को पूरा करने के लिए कौशल शिक्षा, विभिन्न मुद्दों के प्रति यथार्थवादी परिप्रेक्ष्य से व्यापक दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए बहु-विषयक अध्ययन, शिक्षा के प्रति समग्र दृष्टिकोण, सांस्कृतिक लोकाचार और नैतिक मूल्यों से जुड़ाव, वैज्ञानिक मानस और समस्या-समाधान का दृष्टिकोण विकसित करने का प्रावधान होना चाहिए। यह नीति उच्च स्तरीय चिंतन कौशल के उपयोग के साथ-साथ नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा देने पर भी केंद्रित है। देश में विद्यालय स्तर से लेकर उच्चतर शिक्षा तक की शिक्षा प्रणाली में एनईपी 2020 सचमुच में एक क्रांतिकारी मोड़ है।

दिल्ली विश्वविद्यालय शैक्षणिक सत्र 2022-23 से राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करके उच्च शिक्षा में वांछित परिवर्तन लाने के लिए ठोस कदम उठा रहा है। ऐसे विश्वविद्यालय में, जहां छह लाख से अधिक छात्रों के लिए 500 से अधिक पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं, वहाँ एनईपी को लागू करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है। महाविद्यालयों के प्राचार्यों और विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्षों सहित विभिन्न हितधारकों के साथ गहन विचार-विमर्श के बाद एक 'सामान्य स्नातक पाठ्यक्रम रूपरेखा' को तैयार किया गया। तत्पश्चात, जिसे अन्य प्राप्त सुझावों को ध्यान में रखते हुए और भी बेहतर बनाया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित इस "स्नातक पाठ्यक्रम रूपरेखा 2022" को प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस रूपरेखा को छात्र केंद्रित दृष्टिकोण के साथ तैयार किया गया है जिसमें अध्ययन के विषयों के चयन की स्वतंत्रता, विषयों के रचनात्मक संयोजन वाले अकादमिक मार्ग को विकसित करने की सम्भावना, बहु-प्रवेश और बहु-निकास (मल्टी एग्जिट और मल्टी एंट्री) के साथ-साथ, सेमेस्टर-वार शैक्षणिक भार का निर्धारण करने, और जहाँ तक संभव हो अपनी गति-क्षमता के अनुसार सीखने के संदर्भ में लचीलापन प्रदान किया गया है। छात्रों के लिए उपलब्ध पाठ्यक्रमों के विकल्पों की संख्या में वृद्धि से शिक्षकों की संख्या की आवश्यकता में वृद्धि होगी। रूपरेखा में राष्ट्र की संस्कृति और लोकाचार को ध्यान में रखते हुए बहु-विषयक और समग्र शिक्षा प्रदान करने की एनईपी की भावना भी सन्निहित है, जो नवाचार और रोजगार को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान, कौशल विकास और उच्चस्तरीय चिंतन कौशल पर जोर देती है।

मैं इस रूपरेखा को विकसित करने में विश्वविद्यालय के एनईपी प्रकोष्ठ द्वारा किए गए गम्भीर प्रयासों की सराहना करता हूँ। मैं अन्य हितधारकों, शैक्षणिक और परीक्षा शाखा के साथ-साथ दिल्ली विश्वविद्यालय के संगणककेंद्र के योगदान को भी स्वीकार करता हूँ।

योगेश सिंह
कुलपति
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
01.05.2022

स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा – 2022

1. प्रस्तावना

स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा की प्रस्तावना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निहित उच्च शिक्षा के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, दार्शनिक आधार और समकालीन वास्तविकताओं को रेखांकित करती है और उच्च शिक्षा की स्थिति के लिए आगामी मार्ग को प्रशस्त करते हुए इन आधारशिलाओं को समन्वित करने का प्रयास करती है।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित; उच्च शिक्षा में शिक्षण, अधिगम और अनुसंधान के एक प्रमुख केन्द्र दिल्ली विश्वविद्यालय ने राष्ट्र निर्माण के अपने योगदान की प्रक्रिया में शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में शिखर तक पहुंचने की अन्वेषण पिपासा को वास्तविक अर्थों में पोषित किया है। एक केंद्रीय विश्वविद्यालय होने के कारण, उच्च शिक्षा के विस्तार के माध्यम से मानव संसाधन विकास के क्षितिज का विस्तार करने में अनिवार्य रूप से प्रकाशस्तम्भ का कार्य किया है तथा वर्षों से अपने स्नातकपाठ्यक्रम विकास में एक नियमित विशेषता के रूप में रचनात्मक और सार्थक नवाचार के लिए सर्वदा पर्याप्त धनश्रमव्यय किया है।

इस तरह के सुदृढ़ और निरन्तर प्रयास का प्रतिबिम्ब कई दशकों से और विशेष रूप से पिछले दो दशकों में स्नातक पाठ्यचर्या रूपरेखा के क्रमिक संशोधन में स्पष्ट रूप से उदाहृत है, जो विश्व स्तर पर नई सहस्राब्दी में उच्च शिक्षा में उभरती प्रवृत्तियों के साथ तालमेल बिठाते हुए देश के युवाओं को समृद्ध करने में इसके विशिष्ट महत्व को दर्शाता है। हमारे देश के युवा, किसी भी चीज से अधिक नवीन और व्यावहारिक उन्मुख शिक्षण-अधिगम के माध्यम से कौशल विकास की प्रचलित प्राथमिकताओं से सुसज्जित हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति(एनईपी) 2020 में विशद रूप से निर्दिष्ट महत् उद्देश्य को साकार करने के लिए, विश्वविद्यालय ने एनईपी 2020 के उद्देश्य और उसमें अन्तर्निहित दर्शन के अनुरूप अपने स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा के पुनर्गठन और परिशोधन की संभावना का पता लगाने का प्रयास किया है, जो हमारे देश के युवाओं की कल्पना को स्पर्शित करता है; जो विश्व स्तर पर हमारे जनसांख्यिकीय लाभ की समकालीन वास्तविकताओं को प्रदर्शित करता है।

विश्वविद्यालय द्वारा किए गए इस व्यापक अभ्यास का परिणाम स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा - 2022 (स्ना.पा.रू-2022) है जो न केवल रा.शि.नी.(एनईपी) 2020 के प्राणतत्त्व को भाषा और भाव में रेखांकित करता है, अपितु युवा मष्तिष्क को अनुसंधान, नवाचार, प्रशिक्षुता, सामाजिक विस्तारण, उद्यमिता और मानव ज्ञान एवं प्रयास के ऐसे ही क्षेत्रों के प्रति आकृष्ट करने हेतु

विश्वविद्यालय और उसके संघटक महाविद्यालयों के यथार्थत: प्रतप्त शैक्षणिक वातावरण को आत्मसात करते हुए स्नातक स्तर पर एक शिक्षण-अधिगम रूपरेखा का सृजन करने के लिए प्रवर्तित होता है।

इस प्रतिष्ठित संस्थान (आईओई) ने विगत शताब्दी में उच्च शिक्षा में उत्कृष्टता अन्वेषण में कोई शिथिलता नहीं की है, और स्ना.पा.रू.-2022 विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह के ऐतिहासिक अवसर पर नई सहस्राब्दी में इस समृद्ध परंपरा को आगे ले जाने के लिए नियत है।

2. पारिभाषिक संकेताक्षरों के लिए सन्दर्भसारणी

क्र.सं.	English	हिन्दी
1.	'AEC' indicates Ability Enhancement Course'	'क्ष.सं.पा.'(एईसी)' क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम ' को इंगित करता है।
2.	'B.A.' indicates 'Bachelor of Arts'	'क.स्ना.'(बीए) 'कला स्नातक' को इंगित करता है।
3.	'B. Com.' indicates 'Bachelor of Commerce'	'वा.स्ना.'(बीकाम)' वाणिज्य स्नातक' को इंगित करता है।
4.	'B.Sc.' indicates 'Bachelor of Science'	'वि.स्ना.'(बीएससी)' विज्ञान स्नातक' को इंगित करता है।
5.	'DSC' indicates 'Discipline Specific Core'	'अनु.मू.वि.'(डीएससी) 'अनुशासन विशिष्ट मूल' को इंगित करता है।
6.	'DSE' indicates 'Discipline Specific Elective'	'अनु.ऐ.वि.'(डीएसई) 'अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक' को इंगित करता है।
7.	'GE' indicates 'Generic Elective'	'सा.ऐ.'(जीई) 'सामान्य ऐच्छिक' को इंगित करता है।
8.	'NHEQF indicates 'National Higher Education Qualification Framework'	'रा.वि.यो.शि.उ.'(एनएचईक्यूएफ) 'राष्ट्रीय उच्च शिक्षा योग्यता विन्यास' को इंगित करता है।
9.	'SEC' indicates 'Skill Enhancement Course'	'कौ.सं.पा.'(एसईसी) 'कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम' को इंगित करता है।
10.	'VAC' indicates 'Value Addition Course'	'मू.पा.यो.'(वीएसी) 'मूल्य योजन पाठ्यक्रम' को इंगित करता है।

3. संकेताक्षर-सूची

1.	'क्ष.सं.पा.'(एईसी)	‘क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम’ को इंगित करता है।
2.	'क.स्ना.'(बीए)	'कला स्नातक' को इंगित करता है।
3.	‘वा.स्ना.'(बीकाम)	‘वाणिज्य स्नातक' को इंगित करता है।
4.	'वि.स्ना.'(बीएससी)	‘विज्ञान स्नातक' को इंगित करता है।
5.	'अनु.वि.मू.'(डीएससी)	'अनुशासन विशिष्ट मूल' को इंगित करता है।
6.	'अनु.वि.ऐ.'(डीएसई)	'अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक' को इंगित करता है।
7.	'सा.ऐ.'(जीई)	'सामान्य ऐच्छिक' को इंगित करता है।
8.	'रा.उ.शि.यो.वि.'(एनएचईक्यूएफ)	'राष्ट्रीय उच्च शिक्षा योग्यता विन्यास' को इंगित करता है।
9.	'कौ.सं.पा.'(एसईसी)	'कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम' को इंगित करता है।
10.	'मू.यो.पा.'(वीएसी)	'मूल्य योजन पाठ्यक्रम' को इंगित करता है।

4. परिभाषाएं

1. **शैक्षणिक विश्वासमानांक (क्रेडिट):** एक शैक्षणिक विश्वासमानांक (क्रेडिट) वह इकाई है जिसके द्वारा पाठ्यकार्य का मापन किया जाता है। यह प्रति सप्ताह में आवश्यक निर्देशों के घंटों की संख्या को निर्धारित करता है। एक विश्वासमानांक (क्रेडिट) प्रति सप्ताह एक घंटे के शिक्षण (व्याख्यान या अनुव्याख्यान(ट्यूटोरियल)) अथवा दो घंटे के प्रायोगिक कार्य / क्षेत्र कार्य के तुल्य है।

2. अध्ययन के पाठ्यक्रम - अध्ययन के पाठ्यक्रम एक विषय विशेष में अध्ययन के अनुसरण को इंगित करते हैं। प्रत्येक अनुशासन अध्ययन के पाठ्यक्रमों की तीन श्रेणियों को प्रस्तुत करेगा, नामतः अनुशासन विशिष्ट मूल(कोर) (अनु.वि.मू.,डीएससी), अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक (अनु.वि.ऐ.,डीएसई) और सामान्य ऐच्छिक (सा.ऐ.,जीई)।

अ. **अनुशासन विशिष्ट मूल (अनु.वि.मू.,डीएससी) :-** अनुशासन विशिष्ट मूल (डीएससी) अध्ययन का मुख्य पाठ्यक्रम है, जिसे एक छात्र द्वारा अध्ययन के अपने कार्यक्रम की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में स्वीकृत किया जाना चाहिए। अनु.वि.मू. (डीएससी) उस विशेष विषय के मुख्य विश्वासमानांक(क्रेडिट) पाठ्यक्रम होंगे, जिन्हें रा.शि.नी. 2020 के अनुसार अनेक निकास विकल्पों के साथ, छात्र द्वारा किए जा रहे अध्ययन के समसत्र में उचित रूप से वर्गीकृत और व्यवस्थित किया जाएगा। रूपरेखा में निर्दिष्ट अनु.वि.मू. (डीएससी) का निर्धारण एक कार्यक्रम में अध्यापित मूल पाठ्यक्रमों के रूप में सम्बन्धित विभाग द्वारा किया जायेगा। उदाहरण के लिए, एकल अनुशासन विशिष्ट प्रतिष्ठा उपाधि प्रदान करने के लिए, यथा क.स्ना.(बीए) (प्रतिष्ठा) इतिहास, वा.स्ना.(बीकाम) (प्रतिष्ठा), वि.स्ना.(बीएससी) (प्रतिष्ठा) भौतिकी और इसी तरह के ऐसे कार्यक्रम; अनु.वि.मू. (डीएससी) क्रमशः इतिहास, वाणिज्य और भौतिकी के मुख्य पाठ्यक्रम होंगे। यद्यपि 'अध्ययन के बहुविषयक पाठ्यक्रमों के क्षेत्र' (एक एकल अनुशासन के बजाय) में स्नातक प्रतिष्ठा कार्यक्रम का अनुसरण करने के लिए, यथा वि.स्ना. (प्रतिष्ठा) जीवन विज्ञान, क.स्ना. (प्रतिष्ठा) सामाजिक विज्ञान/मानविकी; अनु.वि.मू. (डीएससी) में एक से अधिक विषयों के मूल(कोर) विश्वासमानांक (क्रेडिट) पाठ्यक्रम सम्मिलित होंगे। उदाहरण के लिए, जीवन विज्ञान में वि.स्ना. (प्रतिष्ठा) के लिए एक छात्र तीन विषयों यथा- वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान और रसायन विज्ञान के विश्वासमानांक (क्रेडिट) पाठ्यक्रमों का अध्ययन करेगा। अनु.वि.मू. 1 (डीएससी 1) अनुशासन अ 1 का हो सकता है (जैसे, वनस्पति विज्ञान), अनु.वि.मू. 2 (डीएससी 2) अनुशासन ब 1 का हो सकता है (जैसे, प्राणीविज्ञान) और अनु.वि.मू. 3 (डीएससी 3) अनुशासन स 1 का हो सकता है (जैसे, रसायन विज्ञान)। यद्यपि, इस तरह के प्रतिष्ठा उपाधि कार्यक्रम का चौथे वर्ष केवल एक विषय के अध्ययन के लिए समर्पित होगा और इसलिए सातवें और आठवें समसत्र में अनु.वि.मू. (डीएससी) पाठ्यक्रम इन तीन अनुशासनों के संयोजन के न होकर अनुशासन अ/ब/स के होंगे। कृपया निदर्शन-1 के रूप में दिए गए रूपरेखा का अवलोकन कीजिए।

ब. **अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक (अनु.वि.ऐ., डीएसई):-** अनुशासन विशिष्ट ऐच्छिक (अनु.वि.ऐ.,डीएसई), यथावश्यक, उस विशेष अनुशासन (अध्ययन के एकल अनुशासन कार्यक्रम) या उन अनुशासनों (अध्ययन के बहुविषयक कार्यक्रम) के विश्वासमानांक (क्रेडिट) पाठ्यक्रमों का एक निकाय होगा, जिसे एक छात्र अपने विशेष अनुशासन से अध्ययन हेतु चुनता है। अनु.वि.ऐ. (डीएसई) का एक निकाय होगा जिसमें से एक छात्र अध्ययन के

पाठ्यक्रम का चयन कर सकता है। रूपरेखा में निर्दिष्ट अनु.वि.ऐ. (डीएसई) को सम्बन्धित विभाग द्वारा एक कार्यक्रम में पढ़ाए जाने वाले वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के रूप में पहचाना जाएगा । उदाहरण के लिए, भौतिकी में वि.स्ना.(प्रतिष्ठा) का अनुसरण करने के लिए अनु.वि.ऐ. (डीएसई) का चयन भौतिकी के अनु.वि.ऐ. (डीएसई) निकाय से होना चाहिए। इसी प्रकार जीवन विज्ञान में वि.स्ना.(प्रतिष्ठा) का अनुसरण करने के लिए चयनित अनु.वि.ऐ. को वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान और रसायन विज्ञान के अनु.वि.ऐ. (डीएसई) पाठ्यक्रमों का एक निकाय होना चाहिए, जो अध्ययन के इस कार्यक्रम के लिए मुख्य विषय हैं।

यद्यपि 'अध्ययन के बहुविषयक पाठ्यक्रमों के क्षेत्र' (एक एकल अनुशासन के बजाय) में स्नातक प्रतिष्ठा कार्यक्रम का अनुसरण करने के लिए, यथा वि.स्ना. (प्रतिष्ठा) जीवन विज्ञान, क.स्ना. (प्रतिष्ठा) सामाजिक विज्ञान/मानविकी; इस प्रकार के स्नातक प्रतिष्ठा कार्यक्रम के चौथे वर्ष के सातवें और आठवें समसत्र में छात्र को अनु.वि.मू. (डीएससी) पाठ्यक्रम का चयन इन तीन अनुशासनों के संयोजन से न करके अनुशासन अ/ब/स से करना होगा। कृपया निदर्शन-1 के रूप में दिए गए रूपरेखा का अवलोकन कीजिए।

स. सामान्य ऐच्छिक (सा.ऐ.,जीई):- सामान्य ऐच्छिक पाठ्यक्रमों का एक निकाय होगा जो छात्रों को बहुविषयक या अन्तर्विषयक शिक्षा प्रदान करने के लिए है। सा.ऐ.(जीई) में विषम और सम समसत्रों के समूहों में अध्ययन के विभिन्न विषयों (मूल(कोर) अनुशासन द्वारा प्रस्तावित सा.ऐ. (जीई) के अतिरिक्त) द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले पाठ्यक्रमों का एक निकाय शामिल होगा, जिसमें से कोई छात्र चुन सकता है । रूपरेखा में निर्दिष्ट सा.ऐ. (जीई) की पहचान सम्बन्धित विभाग द्वारा एक कार्यक्रम में अध्यापित सा.ऐ. (जीई) के रूप में की जाएगी । यदि कोई छात्र अध्ययन के अपने अनु. वि. पाठ्यक्रम (पाठ्यक्रमों) से परे अनु.वि.ऐ.(डीएसई) का विकल्प चुनता है, तो ऐसे अनु.वि.ऐ. (डीएसई)को उस छात्र के लिए सा.ऐ. के रूप में माना जाएगा।

द. क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम (क्ष.सं.पा.,एईसी)), कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (कौ.सं.पा.,एसईसी) और मूल्य योजन पाठ्यक्रम (मू.यो.पा.,वीएसी):- ये तीन पाठ्यक्रम सभी विभागों द्वारा विषम और सम समसत्रों के समूहों में प्रस्तुत किए जाने वाले पाठ्यक्रमों का एक निकाय होगा, जिसमें से छात्र चुन सकते हैं। एक छात्र जो शैक्षणिक परियोजना/ उद्यमिता को गौण पाठ्य के रूप में बनाना चाहता है, उसे सा.ऐ.(जीई), कौ.सं.पा.(एसईसी), मू.यो.पा.(वीएसी), और सकार्याधिगम/प्रशिक्षुता/परियोजना/समुदाय विस्तारण(स.प्र.प.सावि.,आईएपीसी) के पाठ्यक्रमों के उपयुक्त संयोजन को चुनना होगा जिन्हें अध्ययन की योजना में निर्दिष्ट विभिन्न मापांकों के रूप में प्रस्तुत किया जायेगा।

(i). क्ष.सं.पा. (एईसी) पाठ्यक्रम सामग्री पर आधारित पाठ्यक्रम हैं जो अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों के माध्यम से ज्ञान वृद्धि की ओर ले जाते हैं। वे भाषा और साहित्य एवं पर्यावरण विज्ञान तथा संधारणीय विकास है जो सभी विषयों के लिए अनिवार्य होंगे।

(ii). कौ.वि.पा.(एसईसी) सभी विषयों में कौशल-आधारित पाठ्यक्रम हैं और इनका उद्देश्य व्यावहारिक प्रशिक्षण, दक्षता, कौशल आदि प्रदान करना है । कौ.सं. पाठ्यक्रमों को कौशल-आधारित निर्देश प्रदान करने के लिए संघटित किए गए पाठ्यक्रमों के निकाय से चुना जा सकता है।

(iii). मू.यो.पा.(वीएसी) मूल्य-आधारित पाठ्यक्रम हैं जो छात्रों के लिए नैतिकता, संस्कृति, भारतीय ज्ञान प्रणाली, संवैधानिक मूल्यों, मृदु-कौशल (सॉफ्ट स्किल्स), खेल, शारीरिक शिक्षा और ऐसे समान मूल्यों को विकसित करने के लिए हैं जो छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायता करेंगे ।

3. प्रमुख अनुशासन -

अ. एक विशिष्ट अनुशासन (कोर पाठ्यक्रम) में चतुर्वर्षीय स्नातक कार्यक्रम का अनुसरण करने वाले छात्र को आठवें समसत्र की सम्पूर्ति पर एक अनुशासन में प्रधान के साथ उचित प्रतिष्ठा उपाधि से सम्मानित किया जाएगा, यदि वह उस अनुशासन में कुल विश्वासमानांक (क्रेडिट) का न्यूनतम 50% अर्जित करता है यथा, उस अनुशासन में कुल 176 विश्वासमानांक (क्रेडिट) में से कम से कम 88 विश्वासमानांक (क्रेडिट) । वह आठ समसत्रों में 20 अनु.वि.मू.(डीएससी) और न्यूनतम 2 अनु.वि.ऐ.(डीएसई) का अध्ययन करेगा । उदाहरण के लिए, एक छात्र जो वा. स्ना.(बीकाम) (प्रतिष्ठा) का अनुसरण करता है उसे वाणिज्य में प्रधान प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए 20 अनु.वि.मू. (डीएससी) और न्यूनतम 2 अनु.वि.ऐ. (डीएसई) से न्यूनतम 88 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करना होगा।

ब. एकाधिक अनुशासन को मूल पाठ्यक्रम (उदाहरण के लिए सामाजिक विज्ञान / मानविकी में क.स्ना., जीवन विज्ञान में वि.स्ना., शारीरिक विज्ञान में वि.स्ना., गणितीय विज्ञान में वि.स्ना., वा.स्ना. और ऐसे अन्य कार्यक्रम) के रूप में चुनकर चतुर्वर्षीय स्नातक कार्यक्रम का अनुसरण करने वाले छात्र को आठवें समसत्र की सम्पूर्ति पर एक अनुशासन में प्रधान के साथ उचित प्रतिष्ठा उपाधि से सम्मानित किया जाएगा, यदि वह उस अनुशासन में कुल 176 विश्वासमानांक (क्रेडिट) में से 80 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करता है । वह पहले छः समसत्रों में उस अनुशासन में 6 अनु.वि.मू. (डीएससी) और न्यूनतम 3 अनु.वि.ऐ. (डीएसई) का अध्ययन करेगा तथा सातवें और आठवें समसत्र में 2 अनु.वि.मू. (डीएससी) और 6 अनु.वि.ऐ. (डीएसई) के साथ उस विषय में लघुशोधप्रबन्ध लिखेगा । उदाहरण के लिए, एक छात्र जो सामाजिक विज्ञान /मानविकी में चारवर्षीय क.स्ना. (प्रतिष्ठा) का अनुसरण करता है वह आठवें समसत्र की सम्पूर्ति पर इतिहास में प्रधान हेतु अर्ह होगा, यदि वह इतिहास के 8 अनु.वि.मू. (डीएससी) एवं कम से कम 9 अनु.वि.ऐ. (डीएसई) से न्यूनतम 80 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करता है और इतिहास से सम्बन्धित विषय पर लघुशोधप्रबन्ध लिखता है ।

4. शैक्षणिक मानकों का न्यूनतम स्वीकार्य स्तर: –

उपलब्धि का न्यूनतम स्वीकार्य स्तर जिसे एक छात्र को शैक्षणिक विश्वासमानांक (क्रेडिट) अथवा योग्यता के पुरस्कार का पात्र होने के लिए प्रदर्शित करना चाहिए, वह शैक्षणिक मानकों का न्यूनतम स्वीकार्य स्तर है। छात्रों के प्रदर्शन के मूल्यांकन प्रक्रिया परिणाम को दर्शाने के लिए उपयोग किए जाने वाले मानाक्षर और मानांक सारिणी -1 में प्रदर्शित किये गए हैं।

सारिणी- 1

मानाक्षर एवं मानांक

मानाक्षर	**मानाङ्क**
O (अप्रतिहतगति)	10
A+ (उत्तमोत्तम)	9
A (अत्युत्तम)	8
B+ (उत्तम)	7
B (साधारण से अधिक)	6
C (साधारण)	5
P (उत्तीर्ण)	4
F (अनुत्तीर्ण)	0
Ab (अनुपस्थित)	0

5. गौण अनुशासन -

अ. ऊपर 3 (अ) में उल्लिखित एक छात्र को आठवें समसत्र की सम्पूर्ति पर एक विषय में गौण से सम्मानित किया जा सकता है, यदि वह उस विषय के सात सा.ऐ.(जीई) पाठ्यक्रमों से न्यूनतम 28 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करता है। उदाहरण के लिए, क.स्ना. (प्रतिष्ठा) इतिहास का अनुसरण करने वाला यदि कोई छात्र कुल बारह सा.ऐ.(जीई) पाठ्यक्रमों में से राजनीति विज्ञान के सात सा.ऐ.(जीई) पाठ्यक्रमों को चुनता है और लघुशोधप्रबन्ध लिखता है तो उसे आठवें समसत्र की सफल सम्पूर्ति पर, इतिहास में प्रधान और राजनीति विज्ञान में गौण प्रमाणपत्र से सम्मानित किया जाएगा।

ब. ऊपर 3 (ब) में उल्लिखित एक छात्र को आठवें समसत्र की सम्पूर्ति पर एक विषय में गौण से सम्मानित किया जा सकता है, यदि वह उस अनुशासन के छह अनु.वि.मू.(डीएससी) और एक अनु.वि.ऐ. (डीएसई) से न्यूनतम 28 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करता है। उदाहरण के लिए,

इतिहास में प्रधान प्रमाणपत्र (इतिहास में न्यूनतम 80 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करने के पश्चात्) के साथ सामाजिक विज्ञान / मानविकी में चतुर्वर्षीय क.स्ना. (प्रतिष्ठा) का अनुसरण करने वाले छात्र को आठवें समसत्र की सफल सम्पूर्ति पर हिन्दी में गौण से सम्मानित किया जा सकता है यदि वह हिन्दी के छः अनु.वि.मू. (डीएससी) और एक अनु.वि.ऐ. (डीएसई) (छठवें समसत्र तक) से 28 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करता है।

गौणता की यह परिभाषा सा.ऐ. से स्वतंत्र है जिसके लिए वहाँ गौण के रूप में स्वीकृति हेतु 28 विश्वासमानांक (क्रेडिट) की आवश्यकता है।

इसके अलावा, यदि कोई छात्र भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित जैसे तीन अनुशासनों के बजाय भौतिकी और रसायन विज्ञान जैसे दो अनुशासनों का विकल्प चुनता है, तो प्रधान और गौण का निर्धारण अध्ययन से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों में अर्जित विश्वासमानांकों के अनुसार किया जाएगा। गौण की अवधारणा तभी प्रासंगिक है जब कोई प्रधान अनुशासन हो।

5. उद्देश्य

स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा-2022 (स्ना.पा.रू.) विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा प्रणाली में व्यवस्थागत परिवर्तन लाने और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ स्वयं को योजित करने के लिए अभिप्रेरित है। स्ना.पा.रू. को संघटित करते समय रा.शि.नी. के निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखा गया है:

- शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक दोनों क्षेत्रों में प्रत्येक छात्र के समग्र विकास को बढ़ावा देना।
- छात्रों को लचीलापन प्रदान करना ताकि शिक्षार्थियों के पास अपने अधिगम मार्ग और कार्यक्रमों को चुनने की क्षमता हो और इस तरह वे अपनी प्रतिभा और रुचि के अनुसार जीवन में अपना मार्ग चुन सकें।
- अध्ययन के अनुशासनों / क्षेत्रों के मध्य हानिकारक पदानुक्रमों और अधिगम के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य जड़भित्तियों का अपसारण।
- समस्त ज्ञान की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने के लिए बहुविषयकता और समग्र शिक्षा
- सर्जनशीलता और आलोचनात्मक चिन्तन का संवर्धन और तार्किक निर्णय लेने और नवाचार को प्रोत्साहित करना।
- नैतिकता तथा मानवीय और संवैधानिक मूल्यों को प्रोत्साहन देना।
- अधिगम और शिक्षण में बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति का संवर्धन करना।
- सम्प्रेषण, सहयोग, सामूहिक कार्य-क्षमता और लचीलापन जैसे जीवन कौशल प्रदान करना।
- उत्कृष्ट शिक्षा और विकास के लिए आवश्यक रूप से उत्कृष्ट अनुसंधान को प्रोत्साहन देना।
- किसी विशेष अनुशासन या अध्ययन क्षेत्र के लिए प्रासंगिक भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेशन करना।

6. स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा की विशेषताएं

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उपरोक्त उद्देश्य स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा की विभिन्न विशेषताओं में परिलक्षित हुए हैं:

- प्रारंभिक वर्षों में जीवन कौशल प्रदान करके छात्रों के समग्र विकास का पोषण किया जाएगा। इन जीवन कौशल पाठ्यक्रमों में 'पर्यावरण और सतत विकास अध्ययन', 'संचार कौशल', 'नैतिकता और संस्कृति', 'विज्ञान और समाज', 'संगणकीय कौशल(कम्प्यूटेशनल स्किल)', 'सूचना प्रौद्योगिकी और 'अंकना विश्लेषिकी(आईटी एंड डाटा एनालिटिक्स)' और इसी तरह के ऐसे कौशल शामिल होंगे जो छात्रों को जीवन की चुनौतियों से निपटने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित करेंगे।

- छात्रों को अपने सीखने के मार्ग को निर्धारित करने और अध्ययन के कार्यक्रमों के अनुसरण में लचीलापन स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा में भलीभांति निहित है। रूपसंरचना छात्रों को उनकी पसंद के आधार पर एक, दो या अधिक विषयों के अध्ययन को मुख्य विषय के रूप में चुनने की अनुमति देता है। उसे अपने चयनित अनुशासन (अनुशासन विशिष्ट पाठ्यक्रमों) से संबद्ध पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने या अन्य अनुशासनों के अन्य क्षेत्रों के अध्ययन में विविधता लाने पर ध्यान केंद्रित करने का विकल्प प्रदान किया गया है। छात्रों को उपयुक्त स्तर पर कौशल संवर्धन पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने या इंटर्नशिप या प्रशिक्षुता या परियोजनाओं या अनुसंधान या सामुदायिक विस्तारण का विकल्प चुनने की छूट भी प्रदान की गई है। चौथे वर्ष में, छात्रों को अपनी औपचारिक शिक्षा पूरी होने के बाद, अपनी पसंद और उनके भविष्य के दृष्टिकोण के आधार पर एक शोध प्रबंध (प्रमुख, लघु अथवा दोनों के संयोजन पर) लिखने अथवा अकादमिक परियोजनाओं या उद्यमिता का विकल्प चुनने के लिए लचीलापन प्रदान किया जाता है। प्रदान किए गए लचीलेपन के बारे में अधिक जानकारी के लिए, सारिणी -3 में दिए गए रूपरेखा को देखिए।

- भारतीय समाज की बहुलता और छात्रों की विविध पृष्ठभूमि को देखते हुए, स्नातक कार्यक्रम के विभिन्न चरणों में उनकी आवश्यकता को समायोजित करने और उनके आधार पर अपनी पढ़ाई पूरी करने की सुविधा के लिए जीवन की प्राथमिकताओं के आधार पर कई निकास और पुन: प्रवेश का प्रावधान प्रदान किया गया है। विश्वासमानांकों (क्रेडिट) का अर्जन एवं उनका शैक्षणिक कोश (अकेडमिक बैंक ऑफ़ क्रेडिट) में संचय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और विश्वविद्यालय द्वारा विहित आदर्शों के अनुसार उपयुक्त प्रमाण पत्र/पत्रोपाधि (डिप्लोमा)/ उपाधि प्रदान करने के लिए अपेक्षित विश्वासमानांक (क्रेडिट) के मोचन के लिए लचीलापन होगा जिसे छात्रों को आजीवन सीखने के अवसर प्रदान करने के साथ-साथ छात्रों की व्यक्तिगत पसंद के आधार पर राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी अन्य विश्वविद्यालय / संस्थान में अध्ययन के कार्यक्रम के अधिरचना से परे शैक्षणिक पहुँच का लाभ उठाने के लिए

उपलब्ध कराया गया है।

- स्ना.पा.रू. में बुनियादी अनुशासन के रूप में चुने गए एक अनुशासन के अतिरिक्त किसी अन्य विषय से कम से कम चार वैकल्पिक प्रश्नपत्रों को चुनने की आवश्यकता को रूपरेखा के भीतर अन्तःस्थापित करके बहु-विषयक शिक्षा को शामिल किया है। वास्तव में, यदि कोई छात्र ऐसा चाहता है, तो वह मुख्य अनुशासन (एकल मुख्य अनुशासन कार्यक्रम करने वाले छात्रों के लिए) के अतिरिक्त किसी विशेष विषय में (गौण प्रमाणपत्र) प्राप्त कर सकता है; वह उस विशेष अनुशासन में कम से कम 28 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करके ऐसा कर सकता है।

- यह रूपरेखा अध्ययन के क्षेत्रों/विषयों के मध्य पदानुक्रम को बनाए नहीं रखता/ समर्थन नहीं करता है तथा अधिगम के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य जुड़ाव करता है। जब तक कोई छात्र किसी पाठ्यक्रम की पूर्व-अर्हताओं को पूरा करता है, तब तक वह इसका अध्ययन करने में सक्षम होगा। अध्ययन के पाठ्यांश या अध्ययन व्यवस्थाओं को सार्थक रूप से निर्धारित किया जाएगा जिससे छात्रों को वांछित परिणाम के लिए पद्धति/शैक्षणिक पथ चुनने में मार्गदर्शन किया जा सके।

- इस रूपरेखा की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें किसी अन्य विषय का अध्ययन मुख्य विषय के रूप में करते हुए बहुभाषावाद को आगे बढ़ाने का प्रावधान है, जिसका किसी भी भाषा और भाषाविज्ञान से कोई सम्बन्ध नहीं है। कार्यक्रम पहले और दूसरे समसत्र (सेमेस्टर) के छात्रों को उन भाषाओं का अध्ययन करने का अवसर प्रदान करते हैं जो भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची के तहत निहित हैं, जिससे छात्रों को उनके समग्र विकास के अवसर प्राप्त होतें हैं। जिसमें उनकी मातृभाषा से अतिरिक्त एक भाषा में दक्षता प्राप्त करने की क्षमता भी शामिल है।

- यह रूपरेखा उन छात्रों, जो सातवें और आठवें समसत्र में प्रधान / गौण विषय पर शोध प्रबंध लिखने का विकल्प चुनते हैं, के लिए छठें और सातवें समसत्र में अनुशासन विशिष्ट वैकल्पिक (डीएसई) पाठ्यक्रमों में से एक के रूप में अनुसंधान पद्धतियों पर एक अनिवार्य अनुशासन प्रदान करती है, इसके अतिरिक्त तीसरे समसत्र से छठे समसत्र तक सकार्य अधिगम (इंटर्नशिप) / प्रशिक्षुता / परियोजना / सामुदायिक विस्तारण के प्रावधान छात्रों को कक्षा की चारदीवारी से परे ज्ञान / गतिविधि के क्षेत्रों का पता लगाने और उसके द्वारा अपनाये गए अध्ययन के पाठ्यक्रम की शैक्षणिक विशेषता को क्षीण किये बिना बाहर की दुनियाँ तक पहुंचने का पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। यह छात्रों के लिए सातवें और आठवें समसत्र (सेमेस्टर) में बाद के चरण में शैक्षणिक परियोजना या उद्यमिता को अपनाने के लिए एक अग्रदूत का काम करता है। इस तरह की पहल से कौशल विकास और अनुसंधान के लिए एक सुदृढ़ नींव रखने में सहायता मिलेगी और इस प्रकार कुशल जनशक्ति और नवाचार के

विकास के माध्यम से समग्र राष्ट्रीय विकास में योगदान मिलेगा।

- स्वयं अपने विश्वविद्यालय के भीतर एवं अन्यान्य विश्वविद्यालयों के मध्य भी छात्रों की गतिशीलता स्नातक पाठ्यक्रम का एक अन्य महत्त्वपूर्ण तत्व है जिसे रूपरेखा में सम्मिलित किया गया है। एक छात्र, इस तरह की गतिशीलता के आधार पर स्वयं अपने विश्वविद्यालय की सीमाओं में, तथा अपने विश्वविद्यालय से अन्य संस्थान में और इसके विपरीत संचरण करने में सक्षम होगा। इस तरह की विशेषता एक छात्र को उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ में शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में अधिकतम लचीलेपन की अनुमति देती है और उसे उसी अपनी कल्पना के अनुरूप जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ बनाती है।

7. योग्यता प्रकार और विश्वासमानांक (क्रेडिट) आवश्यकताएँ

'योग्यताएं औपचारिक पुरस्कार हैं' जैसे कि एक प्रमाण पत्र, पत्रोपाधि(डिप्लोमा) या उपाधि जिन्हें छात्रों को एक सक्षम प्राधिकारी जैसे कि एक महाविद्यालय या विश्वविद्यालय द्वारा अध्ययन के एक विशेष कार्यक्रम के सफल समापन पर अपेक्षित सीखने के परिणामों की प्राप्ति की मान्यता के रूप में प्रदान किया जाता है। उन्हें एक सक्षम निकाय द्वारा आयोजित सीखने के स्तर के मूल्यांकन के बाद सम्मानित किया जाता है जो छात्रों द्वारा दिए गए मानकों के लिए अपेक्षित सीखने के परिणामों की उपलब्धि निर्धारित करता है।" एक छात्र जो किसी सम समसत्र(सेमेस्टर) के अंत में बाहर निकलता है, उसे सम्बन्धित प्रमाणपत्र/पत्रोपाधि(डिप्लोमा)/उपाधि से सम्मानित करने के लिए अपेक्षित विश्वासमानांक (क्रेडिट) (सारिणी-4 में वर्णित) अर्जित करना होता है। स्नातक कार्यक्रमों के स्तर 5 से स्तर 8 के लिए प्रासंगिक योग्यता शीर्षक / नामकरण और सम्बन्धित विश्वासमानांक (क्रेडिट) आवश्यकताएं नीचे तालिका -2 में स्पष्ट रूप से बताई गई हैं।[1]

सारिणी- 2
उपाधि प्रकार एवं अपेक्षित विश्वासमानांक (क्रेडिट)

रा.उ.शि.यो.वि. क्रम	उपाधि नाम / संज्ञा	विश्वासमानांक (क्रेडिट) आवश्यकता
क्रम 5	दूसरे समसत्र की सफल सम्पूर्ति के पश्चात् नि:सरण करने वालों के लिए अधिगम / अनुशासन के क्षेत्र में स्नातक प्रमाणपत्र। (कार्यक्रम अवधि: स्नातक कार्यक्रम के 2 समसत्र)	44

[1] रा.उ.शि.यो.वि. के प्रारूप का अनुच्छेद 2.1 देखिए

क्रम 6	चौथे समसत्र की सफल सम्पूर्ति के पश्चात् नि:सरण करने वालों के लिए अधिगम / अनुशासन के क्षेत्र में स्नातक पत्रोपाधि। (कार्यक्रम अवधि: स्नातक कार्यक्रम के 4 समसत्र)	88
क्रम 7	उन लोगों के लिए स्नातक (प्रतिष्ठा) की उपाधि जो एकल अनुशासन मूल पाठ्यक्रम का विकल्प चुनते हैं और छठे समसत्र की सफल सम्पूर्ति के पश्चात् नि:सरण करते हैं (कार्यक्रम अवधि: 6 समसत्र)	132
क्रम 7	उन लोगों के लिए स्नातक की उपाधि जो एक से अधिक विषयों के मूल पाठ्यक्रमों को चुनते हैं और छठे समसत्र की सफल सम्पूर्ति के पश्चात् नि:सरण करते हैं।(कार्यक्रम की अवधि: 6 समसत्र)	132
क्रम 7	व्यवसाय स्नातक (कार्यक्रम की अवधि: 6 समसत्र)	132
क्रम 8	उन लोगों के लिए स्नातक की डिग्री (अनुसंधान/शैक्षणिक परियोजना/उद्यमितासहकृत प्रतिष्ठा) जो एकल अनुशासन मूल पाठ्यक्रम का विकल्प चुनते हैं और आठवें समसत्र की सफल सम्पूर्ति के पश्चात् नि:सरण करते हैं (कार्यक्रम की अवधि: 8 समसत्र)	176
क्रम 8	उन लोगों के लिए उपयुक्त स्नातक उपाधि (प्रतिष्ठा) जो एक से अधिक अनुशासन कार्यक्रम के मूल पाठ्यक्रमों को चुनते हैं और आठवें समसत्र की सफल सम्पूर्ति के पश्चात् नि:सरण करते हैं (कार्यक्रम की अवधि: 8 समसत्र)	176

8. स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा का विन्यास

स्ना.पा.रू बहु नि:सरण विकल्पों के साथ विभिन्न विषयों में चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रमों के लिए एक संरचना है। संरचना का विवरण नीचे तालिका -3 में दिया गया है।

सारिणी – 3

स्नातक (अध्ययन क्षेत्र/ अनुशासन) (ससम्मान)

समसत्र	**अनु.वि.मू.(कोर)**	**वैकल्पिक (अनु.वि.ऐ.,डीएसई)**	**सामान्य ऐच्छिक (सा.ऐ.,जीई)**	**क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम (क्ष.सं.पा.,एईसी)**	**कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (कौ.सं.पा.,एसईसी)**	**सकार्याधिगम/ प्रशिक्षुता/ परियोजना/सामुदायिक विस्तारण (2)**	**मूल्य योजन पाठ्यक्रम (वीएसी)(2)**	**कुल विश्वास मानांक (क्रेडिट)**
पहले	**अनु.वि.मू.-1(4)** **अनु.वि.मू.-2(4)** **अनु.वि.मू.-3(4)**		पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए सा. ऐ.-1 (4)	क्ष.सं पा. के निकाय से एक को चुनिए (2)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)		पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)	22
द्वितीय	**अनु.वि.मू.-4(4)** **अनु.वि.मू.-5(4)** **अनु.वि.मू.-6(4)**		पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए सा. ऐ.-2 (4)	क्ष.सं पा. के निकाय से एक को चुनिए (2)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)		पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)	22

	पहले और दूसरे समसत्र में अपेक्षित 44 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करने के बाद नि:सरण करने पर छात्रों को स्नातक प्रमाणपत्र (अध्ययन / अनुशासन के क्षेत्र में) से सम्मानित किया जाएगा।					कुल= 44
तृतीय	**अनु.वि.मू.-7(4)** **अनु.वि.मू.-8(4)** **अनु.वि.मू.-9(4)**	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए, अनु.वि.ऐ.-1 (4) अथवा पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए, सा. ऐ.-3 (4)	क्ष.सं पा. के निकाय से एक को चुनिए (2)	एक कौ.सं.पा. का चयन कीजिए अथवा सकार्याधिगम/प्रशिक्षुता/परियोजना/सामुदायिक विस्तारण (स.प्र.प.सावि.) (2)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)	22
चौथे	**अनु.वि.मू.-10(4)** **अनु.वि.मू.-11(4)** **अनु.वि.मू.-12(4)**	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए, अनु.वि.ऐ.-2 (4) अथवा पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए, सा. ऐ.-4 (4)	क्ष.सं पा. के निकाय से एक को चुनिए (2)	एक कौ.सं.पा. का चयन कीजिए अथवा सकार्याधिगम/प्रशिक्षुता/परियोजना/सामुदायिक विस्तारण	9 पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)	22

				(स.प्र.प.सावि.) (2)			
चौथे समसत्र की सम्पूर्ति पर अपेक्षित 88 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करने के बाद नि:सरण करने वाले छात्रों को स्नातक पत्रोपाधि (अध्ययन / अनुशासन के क्षेत्र में) से सम्मानित किया जाएगा।							**कुल= 88**
पञ्चम	**अनु.वि.मू.-13(4)** **अनु.वि.मू.-14(4)** **अनु.वि.मू.-15(4)**	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए, अनु.वि.ऐ. – 3 (4)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए सा. ऐ.-5 (4)		एक कौ.सं.पा. चुनिए अथवा सकार्याधिगम/प्रशिक्षुता/परियोजना/सामुदायिक विस्तारण (स.प्र.प.सावि.) (2)		22
छठे	**अनु.वि.मू.-16(4)** **अनु.वि.मू.-17(4)** **अनु.वि.मू.-18(4)**	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए, अनु.वि.ऐ. – 4 (4)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए सा. ऐ.-6 (4)		एक कौ.सं.पा. चुनिए अथवा सकार्याधिगम/प्रशिक्षुता/परियोजना/सामुदायिक विस्तारण		22

					(स.प्र.प.सावि.) (2)		
छठे समसत्र की सम्पूर्ति पर अपेक्षित 132 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करने के बाद नि:सरण करने वाले छात्रों को स्नातक प्रतिष्ठा उपाधि (अध्ययन / अनुशासन के क्षेत्र में) से सम्मानित किया जाएगा।							**कुल= 132**
सातवें	**अनु.वि.मू.-19(4)**	तीन अनु.वि.ऐ. (3x4) पाठ्यक्रमों को चुनिए अथवा दो अनु.वि.ऐ. (2x4) एवं एक सा. ऐ. (4) पाठ्यक्रम को चुनिए अथवा एक अनु.वि.ऐ. एवं दो सा. ऐ. (4) पाठ्यक्रम को चुनिए अथवा सभी तीन सा. ऐ. 7,8,9 (3x4) (कुल = 12)				प्रधान पर लघुशोधप्रबन्ध(6) अथवा गौण पर लघुशोधप्रबन्ध (6) अथवा शैक्षणिक परियोजना/ उद्यमिता (6)	22
आठवें	**अनु.वि.मू.-20(4)**	तीन अनु.वि.ऐ. (3x4) पाठ्यक्रमों को चुनिए अथवा दो अनु.वि.ऐ. (2x4) एवं एक सा. ऐ. (4) पाठ्यक्रम को चुनिए अथवा एक अनु.वि.ऐ. एवं दो सा. ऐ. (4) पाठ्यक्रम को चुनिए अथवा सभी तीन सा. ऐ. 10,11,12 (3x4) (कुल = 12)				प्रधान पर लघुशोधप्रबन्ध(6) अथवा गौण पर लघुशोधप्रबन्ध (6) अथवा शैक्षणिक परियोजना/ उद्यमिता (6)	22

आठवें समसत्र की सम्पूर्ति पर अपेक्षित 176 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करने के बाद नि:सरण करने वाले छात्रों को स्नातक (अध्ययन / अनुशासन के क्षेत्र में) (शोध/ शैक्षणिक परियोजना/ उद्यमितासहकृत प्रतिष्ठा) अथवा (अनुशासन-1(प्रधान) सहित अनुशासन-2 (लघु) सहित शोधसहकृत प्रतिष्ठा) से सम्मानित किया जाएगा।	**कुल= 176**

* तीसरे एवं चौथे समसत्र में प्रत्येक समसत्र में दो विश्वासमानांक (क्रेडिट) के लिए एक 'कौ.सं.पा.'(एसईसी) या वैकल्पिक 'सकार्याधिगम/प्रशिक्षुता/परियोजना/सामुदायिक विस्तारण(आईएपीसी)' चुनने का विकल्प होगा।

** तीसरे एवं चौथे समसत्र में या तो अनु.वि.ऐ. (डीएसई) या सा.ऐ.(जीई) चुनने का विकल्प होगा।

*** प्रत्येक समसत्र में दो विश्वासमानांक (क्रेडिट) के लिए पांचवे एवं छठे समसत्र में या तो एक 'कौ.सं.पा.(एसईसी)' या वैकल्पिक 'सकार्याधिगम/प्रशिक्षुता/परियोजना/सामुदायिक विस्तारण(आईएपीसी)' चुनने का विकल्प होगा।

सातवें एवं आठवें समसत्र में तीन विकल्प होंगे -

अ) प्रत्येक में 4 विश्वासमानांक (क्रेडिट) के तीन अनु.वि.ऐ.(डीएसई) का चयन अथवा

आ) प्रत्येक में 4 विश्वासमानांक (क्रेडिट) के दो अनु.वि.ऐ. (डीएसई) और एक सा.ऐ.(जीई) का चयन अथवा

इ) प्रत्येक में 4 विश्वासमानांक (क्रेडिट) के एक अनु.वि.ऐ. (डीएसई) और दो सा.ऐ. (जीई)का चयन अथवा

ई) च प्रत्येक में 4 विश्वासमानांक (क्रेडिट) के तीन सा.ऐ.(जीई) का चयन।

^ शोध प्रविधि' को छठे एवं सातवें समसत्र में अनु.वि.ऐ. पाठ्यक्रमों में से एक के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। छात्र छठे एवं सातवें समसत्र में इसका चयन कर सकते हैं। हालांकि, तीन प्रमुख विषयों में बहु-विषयक अध्ययन करने वाले छात्र को छठे समसत्र में शोध पद्धति का चयन करना होगा, यदि वह चौथे वर्ष में तीन विषयों में से एक में प्रधान का चयन करना चाहती/ चाहता है। मान लीजिए कि एक छात्र किसी अन्य विषय (इसके अनु.वि.ऐ. में से एक के रूप में) द्वारा प्रस्तावित अनुसंधान पद्धति पाठ्यक्रम का अध्ययन करना चाहता है ; ऐसी स्थिति में, वह इसका चयन कर सकता/सकती है, बशर्ते कि ऐसा अनुशासन उसका गौण अनुशासन हो। इस प्रकार चुने गए किसी अन्य विषय की अनुसंधान पद्धति को उसके लिए सामान्य ऐच्छिक(जीई) माना जाएगा।

9. टिप्पणी

1. **प्रवेशस्तरीय अर्हता :** स्तर 5 में प्रवेश के लिए सामान्य प्रदायिका श्रेणी 12वीं कक्षा को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करने के बाद प्राप्त माध्यमिक विद्यालय का त्यागप्रमाणपत्र है। स्नातक उपाधि के पहले वर्ष में प्रवेश के लिए अध्ययन का एक कार्यक्रम उन छात्रों के लिए खुला है, जिन्होंने प्रवेश आवश्यकताओं को पूरा किया है, जिसमें कार्यक्रम प्रवेश नियमों में उल्लिखित शिक्षा के माध्यमिक स्तर पर प्राप्ति के निर्दिष्ट स्तर शामिल हैं। अध्ययन के स्नातक उपाधि कार्यक्रम में प्रवेश आवेदक की योग्यता के अभिलेखीय साक्ष्य (शैक्षणिक उपलब्धि सहित) के मूल्यांकन और स्नातक उपाधि कार्यक्रम को पूर्ण करने की क्षमता पर आधारित है, जिसे उच्च शिक्षा में प्रस्तावित शैक्षणिक पाठ्यक्रम में एकाधिक प्रवेश एवं नि:सरण हेतु वि.अनु.आ. के दिशानिर्देश में निर्दिष्ट किया गया है।

2. एक विश्वासमानांक (क्रेडिट) पाठ्यक्रम के घंटों की संख्या को उसके व्याख्यान, अनुव्याख्यान (ट्यूटोरियल) और प्रायोगिक कार्य के घटक द्वारा परिभाषित किया जाएगा।

3. प्रत्येक छात्र को "पर्यावरण विज्ञान और सन्धारणीय विकास" पाठ्यक्रम 1 और 2 को पहले वर्ष (पहले / दूसरे समसत्र) और दूसरे वर्ष (तीसरे / चौथे समसत्र) में क्रमशः प्रत्येक में 2 विश्वासमानांक (क्रेडिट) हेतु अध्ययन करना होगा। क्ष.सं.पा.(एईसी) निकाय में भारत के संविधान की परिवर्धमान आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध भाषाओं के विश्वासमानांक (क्रेडिट) पाठ्यक्रम भी शामिल होंगे। दिल्ली विश्वविद्यालय उन महाविद्यालयों (जहाँ शिक्षक उपलब्ध नहीं है) को आवश्यक सहायता प्रदान करेगा, जिन्हें इन भाषाओं में शिक्षण-अधिगम के दौरान इसकी आवश्यकता हो सकती है।

4. **प्रमाणपत्रों का रूपरेखा**: छात्र पारंपरिक मार्ग का अनुसरण करने के बजाय, अपनी क्षमता और उपलब्धि के अनुरूप भविष्य के लिए अपने लक्ष्य और आकांक्षा के अनुसार अपनी उपाधियों का रूपरेखा करने में सक्षम होंगे।

5. एक छात्र जो मूल पाठ्यक्रम के रूप में एक विशिष्ट विषय में त्रिवर्षीय स्नातक उपाधि कार्यक्रम का अनुसरण करता है [उदाहरण के लिए, क.स्ना. (प्रतिष्ठा) अंग्रेजी, वा.स्ना. (प्रतिष्ठा), वि.स्ना. (प्रतिष्ठा) भौतिकी और ऐसे अन्य कार्यक्रम] उसे उस विषय में कम से कम 80 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करने होंगे (18 अनु.वि.पा.(डीएससी) से और उस अनुशासन के कम से कम 2 अनु.वि.ऐ.पा. (डीएसई) से) और उसे उस विषय में प्रतिष्ठा की उपाधि से सम्मानित किया जाएगा, यदि वह छठे समसत्र की सम्पूर्ति पर बाहर निकलता है।

6. एक छात्र यदि एक से अधिक अनुशासन में अध्ययन के मूल पाठ्यक्रमों के रूप में एक से अधिक विषयों में त्रिवर्षीय स्नातक उपाधि कार्यक्रम का अनुसरण करता है (उदाहरण के लिए सामाजिक विज्ञान / मानविकी में क.स्ना., जीवन विज्ञान में वि.स्ना., शारीरिक विज्ञान में वि.स्ना., गणित विज्ञान में वि.स्ना., वाणिज्य अध्ययन में स्नातक और ऐसे अन्य कार्यक्रम) और उसे अध्ययन के बहुविषयक पाठ्यक्रम के क्षेत्र में स्नातक की उपाधि से सम्मानित किया जाएगा, यदि वह छठे समसत्र की सम्पूर्ति पर बाहर निकलता है।

7. यदि कोई छात्र अनुसंधान के साथ चतुर्वर्षीय प्रतिष्ठा उपाधि का अनुसरण करना चाहता है, तो उसे अनिवार्य रूप से अनु.वि.ऐ.पा. (डीएसई) के रूप में छठे अथवा सातवें समसत्र में अनुसन्धान प्रविधि पाठ्यक्रम का विकल्प चुनना होगा।

8. चौथे वर्ष में लघुशोधप्रबन्ध/शैक्षणिक परियोजना/उद्यमिता सातवें समसत्र से आरम्भ होगी और आठवें समसत्र में समाप्त होगी। इन तीन विकल्पों में से चुने गए प्रत्येक पथ के विस्तृत परिणाम अधिसूचित किए जाएंगे और सातवें और आठवें समसत्र की समाप्ति पर तदनुसार मूल्यांकन किया जाएगा।

9. लघुशोधप्रबन्ध, प्रधान अथवा गौण अथवा अंतरानुशासनिक (प्रधान और गौण का संयोजन) अनुशासन में लिखा जा सकता है।

10. उपरोक्त (बिन्दु 6) में उल्लिखित कोई छात्र यदि बहुविषयक अध्ययन के क्षेत्र में प्रतिष्ठा की उपाधि अर्जित करने के लिए चौथे वर्ष में अविरत रहता है अथवा पुनः प्रवेश करता है, तो उसे विगत छह समसत्रों में मुख्य पाठ्यक्रमों के रूप में अध्ययन किए गए अनुशासनों में से केवल एक का चयन करना होगा ; वह सातवें और आठवें समसत्र में चुने हुए अनुशासन के 2 अनु.वि.मू. (डीएससी) पाठ्यक्रमों और 6 अनु.वि.ऐ. (डीएसई) पाठ्यक्रमों से विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करे और लघु शोध प्रबंध लिखे या शैक्षणिक परियोजना या उद्यमिता का विकल्प चुने।

11. उपरोक्त (बिन्दु 5) में उल्लिखित कोई छात्र यदि सातवें और आठवें समसत्र में समान अनुशासन में अध्ययन जारी रखता है या पुनः प्रवेश करता है, और ऊपर (बिन्दु 9) निर्दिष्ट लघु शोधप्रबंध लिखता है, किन्तु किसी गौण अनुशासन का अध्ययन नहीं करता है (अर्थात्, किसी एक अनुशासन के सा.ऐ.(जीई) में अर्जित विश्वासमानांक (क्रेडिट) यदि 28 से कम हैं), तो उसे आठवें समसत्र के सफल समापन पर उस अनुशासन में प्रधान के साथ 'शोधसहकृत-प्रतिष्ठा' से सम्मानित किया जाएगा।

12. ऊपर (बिन्दु 6) उल्लिखित एक छात्र को आठवें समसत्र के सफल समापन पर बहु-विषयक अध्ययन के उस क्षेत्र में 'प्रतिष्ठा' की उपाधि प्रदान की जाएगी। उदाहरण के लिए, क.स्ना.

(प्रतिष्ठा) सामाजिक विज्ञान/मानविकी, वि.स्ना. (प्रतिष्ठा) जीवन विज्ञान, वि.स्ना. (प्रतिष्ठा) भौतिक विज्ञान, वि.स्ना. (प्रतिष्ठा) शारीरिक विज्ञान, वि.स्ना. (प्रतिष्ठा) गणित विज्ञान और वा.स्ना. (प्रतिष्ठा)। प्रधान और गौण का संकेतन 3(3) (ब) और 3(5) (ब) में क्रमशः निर्दिष्ट ऊपर उल्लिखित शर्तों को पूरा करने पर किया जाएगा। उदाहरण के लिए, एक छात्र जो इतिहास, राजनीति विज्ञान और हिंदी को मुख्य पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ते हुए सामाजिक विज्ञान / मानविकी में चतुर्वर्षीय क.स्ना. (प्रतिष्ठा) कार्यक्रम का अनुसरण करता है, इतिहास विषय में यदि 8 अनु. वि. मू. (डीएससी) पाठ्यक्रमों और कम से कम 9 अनु. वि. ऐ. (डीएसई) पाठ्यक्रमों से न्यूनतम 80 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करता है और इतिहास से सम्बन्धित विषय पर लघुशोधप्रबंध लिखता है तो आठवें समसत्र की सफल सम्पूर्ति पर इतिहास में प्रधान प्राप्त करेगा। ऐसा छात्र राजनीति विज्ञान / हिंदी में गौण प्राप्त करेगा, यदि वह राजनीति विज्ञान / हिंदी के 6 अनु. वि. मू. (डीएससी) पाठ्यक्रमों और एक अनु. वि. ऐ. (डीएसई) पाठ्यक्रम से न्यूनतम 28 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करता है।

13. केवल ऊपर (5) में उल्लिखित एक छात्र, जो चौथे वर्ष में सातवें और आठवें समसत्र में प्रधान / गौण (मेजर/माइनर) विषय में एक लघुशोधप्रबन्ध लिखने का विकल्प चुनता है, उसे ' अध्ययन क्षेत्र /अनुशासन स्नातक (शोधसहकृत प्रतिष्ठा)' से सम्मानित किया जाएगा। उदाहरण के लिए, एक छात्र जो भौतिकी में वि.स्ना. (प्रतिष्ठा) का अध्ययन करता है और सातवें और आठवें समसत्र में भौतिकी या गौण से सम्बन्धित विषय पर एक लघुशोधप्रबंध लिखता है, उसे 'वि.स्ना. (शोधसहकृत प्रतिष्ठा) भौतिकी' से सम्मानित किया जाएगा। प्रधान और गौण का संकेतन 3(3)(ब) और 3(5)(ब) में क्रमशः निर्दिष्ट ऊपर उल्लिखित शर्तों को पूरा करने पर किया जाएगा।

14. एक छात्र जो लघुशोधप्रबंध लिखने के स्थान पर सातवें और आठवें समसत्र में शैक्षणिक परियोजना या उद्यमिता का विकल्प चुनता है, और प्रासंगिक सा.ऐ.(जीई), कौ.सं.पा.(एसईसी), क्ष.सं.पा.(एईसी) और स.प्र.प.सावि.,आईएपीसी) में 28 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करता है, उसे स्थिति के अनुसार शैक्षणिक परियोजना या उद्यमिता में गौण से सम्मानित किया जाएगा। 'अध्ययन क्षेत्र/अनुशासन स्नातक (शैक्षणिक परियोजना/उद्यमिता प्रतिष्ठा) अनुशासन (प्रधान) एवं शैक्षणिक परियोजना/उद्यमिता (गौण)'। यदि वह अपेक्षित 28 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करने में असमर्थ है, तो उसे 'अध्ययन क्षेत्र/अनुशासन स्नातक (शैक्षणिक परियोजना/उद्यमिता प्रतिष्ठा) अनुशासन (प्रधान) से सम्मानित किया जाएगा।

15. चतुर्वर्षीय स्नातक उपाधि कार्यक्रम करने वाले छात्र को आठवें समसत्र की सम्पूर्ति पर एक उपयुक्त उपाधि प्रदान की जाएगी।

16. नि:सरण विकल्प: प्रति समसत्र एक छात्र द्वारा अर्जित किया जाने वाला न्यूनतम

विश्वासमानांक (क्रेडिट) 18 है और अधिकतम विश्वासमानांक (क्रेडिट) 26 है। तथापि, छात्रों को प्रति समसत्र 22 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करने का परामर्श दिया जाता है। यह प्रावधान छात्रों को समसत्रवार शैक्षणिक भार के लघुकरण और उनकी अपनी गति से सीखने के लिए है। हालांकि, एक छात्र को, जो सम समसत्र के अन्त में नि:सरण का विकल्प चुनता है, अध्ययन / अनुशासन के क्षेत्र में स्नातक प्रमाणपत्र/ स्नातक पत्रोपाधि(डिप्लोमा)/ उपयुक्त स्नातक उपाधि, प्रदान करने के उद्देश्य से विश्वासमानांक (क्रेडिट) की अनिवार्य संख्या को सुरक्षित किया जाना आवश्यक है (अधोनिर्दिष्ट सारिणी 4 में विवरण दिया गया है)।

सारिणी-4

संख्या	**उपाधि प्रकार**	**नि:सरण स्थिति**	**उपाधि हेतु आवश्यक विश्वासमानाङ्क (क्रेडिट)**
1	स्नातक प्रमाणपत्र अध्ययन/अनुशासन के क्षेत्र में	दूसरे समसत्र की सफल सम्पूर्ति के पश्चात्	44
2	स्नातक पत्रोपाधि(डिप्लोमा) अध्ययन/अनुशासन के क्षेत्र में	चौथे समसत्र की सफल सम्पूर्ति के पश्चात्	88
3	स्नातक (अध्ययन क्षेत्र) (प्रतिष्ठा) अनुशासन (एकल–मूल अनुशासन पाठ्यक्रम के लिए)	छठे समसत्र की सफल सम्पूर्ति के पश्चात्	132
4	विविध अनुशासन पाठ्यक्रम में स्नातकप्रतिष्ठा (विविध अनुशासनिक पाठ्यक्रम के लिए)	छठे समसत्र की सफल सम्पूर्ति के पश्चात्	132
5	अनुशासन (एकल मूल)	आठवें समसत्र की सफल	176

	अनुशासन पाठ्यक्रम के लिए (शोध–सहित प्रतिष्ठा/अकादमिक परियोजना / उद्यमिता)	सम्पूर्ति के पश्चात्	
6	स्नातकप्रतिष्ठा (विविध अनुशासनिक पाठ्यक्रम क्षेत्र के लिए)	आठवें समसत्र की सफल सम्पूर्ति के पश्चात्	176

17. पाठ्यक्रम का शीर्षक, कूटसंख्या, विश्वासमानांक (क्रेडिट) , व्याख्यानघटक, अनुव्याख्यान (ट्यूटोरियल) और प्रायोगिककार्य, उस पाठ्यक्रम का चयन करने के लिए पूर्व-आवश्यकताएं और पाठ्यक्रम के व्यवस्थापक विभाग; इनको प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए सुव्याख्यायित किया जायेगा (कृपया सारिणी- 5 का अवलोकन कीजिए) । एक छात्र को अध्ययन के लिए इसे चुनने में सक्षम होने के लिए पाठ्यक्रम की पूर्व-आवश्यकताओं को प्रपूरित करना चाहिए।

सारिणी – 5

(सारिणी में प्रदत्त उदाहरण निदर्शात्मक मात्र हैं।)

क्रमसं.	पाठ्यक्रम शीर्षक	पाठ्यक्रम कूट	विश्वासमानाङ्क	पाठ्यक्रम घटक			पाठ्यक्रम अर्हता
				व्याख्यान	अनुव्याख्यान	प्रायोगिककार्य	
1.	अ	अनु.वि.मू.पा. (डीएससी) 01	04	3	0	1	शून्य
2.	ब	अनु.वि.मू.पा. (डीएससी) 05	04	2	0	2	अनु.वि.मू.पा. (डीएससी) 01 उत्तीर्ण
3.	स	सा.ऐ.(जीई)01	04	3	1	0	शून्य
4.	द	सा.ऐ.(जीई)03	04	3	1	0	सा.ऐ. 01 उत्तीर्ण
5.	प	कौ.सं.पा.(एसइसी)01	02	1	0	1	शून्य

सारिणी – 6

निदर्शन-1 बहुविषयक अध्ययन पाठ्यक्रमों हेतु स्ना.पा.रू प्रतिमान@#

समसत्र	**मूल(डीएससी))**	**ऐच्छिक (अनु.वि.ऐ.पा.,डीएसई)**	**सामान्य ऐच्छिक (सा.ऐ., जीई)**	**क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम (क्ष.सं.पा.,एइसी)**	**कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (कौ.सं.पा.,एसईसी)**	**सकार्याधिगम /प्रशिक्षुता/परियोजना (2)**	**मूल्य योजन पाठ्यक्रम(2)**	**सम्पूर्ण विश्वासमानांक (क्रेडिट)**
पहले	अनुशासन अ 1(4) - अनुशासन ब 1(4) - अनुशासन स 1(4) -		पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए सा. ऐ.-1 (4)	क्ष.सं पा. के निकाय से एक को चुनिए (2)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)		पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)	22
द्वितीय	अनुशासन अ 2(4) - अनुशासन अ 2(4) - अनुशासन अ 3(4) -		पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए सा. ऐ.-2 (4)	क्ष.सं पा. के निकाय से एक को चुनिए (2)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)		पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)	22
पहले एवं दूसरे समसत्र में अपेक्षित 44 विश्वासमानांकों के अर्जनोपरांत नि:सरण करने वाले छात्रों को								**योग = 44**

स्नातक प्रमाणपत्र (बहुविषयक अध्ययन के क्षेत्र में) से अलंकृत किया जायेगा।						
तृतीय	अनुशासन अ 3(4) - अनुशासन अ 3(4) - अनुशासन अ 3(4) -	पाठ्यक्रमों के निकाय से चुनिए, अनु.वि. ऐ. अ/ब/स (4) अथवा पाठ्यक्रमों के निकाय से चुनिए, सा.ऐ.- 3(4)	क्ष.सं.पा. के निकाय से एक को चुनिए (2)	एक कौ.सं.पा. चुनिए अथवा सकार्याधिगम/प्रशिक्षुता/परियोजना/सामुदायिक विस्तारण (2)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए	22
चौथे	अनुशासन अ 4(4) -	पाठ्यक्रमों के	क्ष.सं.पा. के निकाय से एक	एक कौ.सं.पा. चुनिए अथवा	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए	22

	अनुशासन अ 4(4) - अनुशासन अ 4(4) -	निकाय से चुनिए, अनु.वि. ऐ. अ/ब/स (4) अथवा पाठ्यक्रमों के निकाय से चुनिए, सा.ऐ.- 4(4)	को चुनिए (2)	सकार्याधिगम/प्रशिक्षुता/परियोजना/सामुदायिक विस्तारण (2)		

चौथे समसत्र में अपेक्षित 44 विश्वासमानांकों के अर्जनोपरांत नि:सरण करने वाले छात्रों को स्नातक पत्रोपाधि (बहुविषयक अध्ययन के क्षेत्र में) से अलंकृत किया जायेगा।							**योग = 88**
पञ्चम	अनुशासन अ 5(4) - अनुशासन अ 5(4) - अनुशासन अ 5(4) -	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए अनु.वि.ऐ. अ/ब/स – (4)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए सा.ऐ.– 5(4)		एक कौ.सं.पा. चुनिए अथवा सकार्याधिगम/प्रशिक्षुता/परियोजना/सामुदायिक विस्तारण (2)		22
छठे	अनुशासन अ 6(4) - अनुशासन अ 6(4) - अनुशासन अ 6(4) -	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए अनु.वि.ऐ. अ/ब/स – (4)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए सा.ऐ.– 6(4)		एक कौ.सं.पा. चुनिए अथवा सकार्याधिगम/प्रशिक्षुता/परियोजना/सामुदायिक विस्तारण (2)		22
छठे समसत्र में अपेक्षित 132 विश्वासमानांकों के अर्जनोपरांत नि:सरण करने वाले छात्रों को स्नातक उपाधि (बहुविषयक अध्ययन के क्षेत्र में) से अलंकृत किया जायेगा।							**योग= 132**

सातवें	अनु.वि.मू.पा.- (4)	तीन अनु.वि.ऐ. (3x4) पाठ्यक्रमों को चुनिए अथवा दो अनु.वि.ऐ. (2x4) पाठ्यक्रम और एक सा.ऐ.(4) को चुनिए अथवा एक अनु.वि.ऐ. एवं दो सा.ऐ. (4) पाठ्यक्रमों को चुनिए अथवा सभी तीन सा.ऐ. 7,8,9 (योग = 12)				प्रधान पर लघुशोधप्रबन्ध (4+2) अथवा गौण पर लघुशोधप्रबन्ध (4+2) अथवा शैक्षणिक परियोजना/ उद्यमिता (4+2)	22
आठवें	अनु.वि.मू.पा.- (4)	तीन अनु.वि.ऐ. (3x4) पाठ्यक्रमों को चुनिए अथवा दो अनु.वि.ऐ. (2x4) पाठ्यक्रम और एक सा.ऐ.(4) को चुनिए अथवा एक अनु.वि.ऐ. एवं दो सा.ऐ. (4) पाठ्यक्रमों को चुनिए अथवा सभी तीन सा.ऐ. 7,8,9 (योग = 12)				प्रधान पर लघुशोधप्रबन्ध (4+2) अथवा गौण पर लघुशोधप्रबन्ध (4+2) अथवा शैक्षणिक परियोजना/ उद्यमिता (4+2)	22
आठवें समसत्र की सम्पूर्ति पर अपेक्षित 176 विश्वासमानांकों के अर्जनोपरांत नि:सरण करने वाले छात्रों को स्नातक उपाधि (बहुविषयक अध्ययन के क्षेत्र में) (प्रतिष्ठा/ शैक्षणिक परियोजना/उद्यमितासहकृत प्रतिष्ठा) से अलंकृत किया जायेगा।							**योग= 176**

@# रूपरेखा सारिणी-3 में प्रदान किए गए सामान्य स्ना.पा.रू पर आधारित है और उन कार्यक्रमों के लिए प्रासंगिक है जहाँ एक से अधिक विषयों को मूल

पाठ्यक्रमों के रूप में प्राथमिकता दी जाती है, यथा जीवन विज्ञान, भौतिक विज्ञान में स्नातक अथवा अध्ययन के ऐसे किसी भी अन्य बहु-विषयक क्षेत्र में।

निदर्शन-2 एकाधिक मूल अनुशासनिक पाठ्यक्रमों के अध्ययन हेतु स्ना.पा.रू प्रतिमान								
समसत्र	**मूल (अनु.वि.मू.पा.डीए ससी)**	**ऐच्छिक (अनु.वि.ऐ.पा., डीएसई)**	**सामान्य ऐच्छिक (सा.ऐ.,जीई)**	**क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम (क्ष.सं.पा.,एईसी)**	**कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (कौ.सं.पा.,एसइसी)**	**सकार्याधिगम/ प्रशिक्षुता/परियोजना(आईएपीसी) (2)**	**मूल्य योजन पाठ्यक्रम(2)**	**सम्पूर्ण विश्वासमानांक (क्रेडिट)**
पहले	अनु.वि.मू.-1 (अ/ब) अनुशासन अ-1 अनुशासन ब-1		सा.ऐ.भाषाओं के निकाय से एक को चुनिए भाषा -1* सा.ऐ.-1(4)	क्ष.सं.पा. के निकाय से एक को चुनिए (2)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)		पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)	22
द्वितीय	अनु.वि.मू.-2 (अ/ब) अनुशासन अ-2 अनुशासन ब-2		सा.ऐ.भाषाओं के निकाय से एक को चुनिए भाषा -2* सा.ऐ.-2(4)	क्ष.सं.पा. के निकाय से एक को चुनिए (2)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)		पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)	22
पहले एवं दूसरे समसत्र में अपेक्षित 44 विश्वासमानांकों के अर्जनोपरांत नि:सरण करने वाले छात्रों को स्नातक प्रमाणपत्र (बहुविषयक अध्ययन के क्षेत्र में) से अलंकृत किया जायेगा।								**योग = 44**

तृतीय	अनु.वि.मू.-3 (अ/ब) अनुशासन अ-3 अनुशासन ब-3	सा.ऐ.भाषाओं के निकाय से एक को चुनिए भाषा -3* सा.ऐ.-3(4)	क्ष.सं.पा. के निकाय से एक को चुनिए (2)	एक कौ.सं.पा. चुनिए अथवा सकार्याधिगम/प्रशिक्षुता/परियोजना/सामुदायिक विस्तारण (2)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)	22
चौथे	अनु.वि.मू.-4 (अ/ब) अनुशासन अ-4 अनुशासन ब-4	सा.ऐ.भाषाओं के निकाय से एक को चुनिए भाषा -4* सा.ऐ.-4(4)	क्ष.सं.पा. के निकाय से एक को चुनिए (2)	एक कौ.सं.पा. चुनिए अथवा सकार्याधिगम/प्रशिक्षुता/परियोजना/सामुदायिक विस्तारण (2)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए (2)	22
चौथे समसत्र में अपेक्षित 44 विश्वासमानांकों के अर्जनोपरांत नि:सरण करने वाले छात्रों को स्नातक पत्रोपाधि (बहुविषयक अध्ययन के क्षेत्र में) से अलंकृत किया जायेगा।						**योग=88**
पञ्चम	अनु.वि.मू.-5 (अ/ब) अनुशासन अ5 अनुशासन ब5	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए अनु.वि.ऐ.-1 (अ/ब) (4)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए		एक कौ.सं.पा. चुनिए अथवा सकार्याधिगम/प्रशिक्षुता/परियोजना/सामुदायिक विस्तारण (2)	22

			सा.ऐ.-5 (4)				
छठे	अनु.वि.मू.-6 (अ/ब) अनुशासन अ-6 अनुशासन ब-6	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए अनु.वि.ऐ.-2 (अ/ब) (4)	पाठ्यक्रमों के निकाय से एक को चुनिए सा.ऐ.-6 (4)		एक कौ.सं.पा. चुनिए अथवा सकार्याधिगम/प्रशिक्षुता/परियोजना/सामुदायिक विस्तारण (2)		22
छठे समसत्र में अपेक्षित 132 विश्वासमानांकों के अर्जनोपरांत नि:सरण करने वाले छात्रों को स्नातक उपाधि (बहुविषयक अध्ययन के क्षेत्र में) से अलंकृत किया जायेगा।							**योग= 132**

सातवें	अनु.वि.मू.पा.-13 (4)	तीन अनु.वि.ऐ. (3x4) पाठ्यक्रमों को चुनिए अथवा दो अनु.वि.ऐ. (2x4) पाठ्यक्रम और एक सा.ऐ.(4) को चुनिए अथवा एक अनु.वि.ऐ. एवं दो सा.ऐ. (4) पाठ्यक्रमों को चुनिए अथवा सभी				प्रधान पर लघुशोधप्रबन्ध (4+2) अथवा गौण पर लघुशोधप्रबन्ध (4+2) अथवा शैक्षणिक परियोजना/ उद्यमिता (4+2)	22

		तीन सा.ऐ. 7,8,9 (योग = 12)					
आठवें	अनु.वि.मू.पा.-14 (4)	तीन अनु.वि.ऐ. (3x4) पाठ्यक्रमों को चुनिए अथवा दो अनु.वि.ऐ. (2x4) पाठ्यक्रम और एक सा.ऐ.(4) को चुनिए अथवा एक अनु.वि.ऐ. एवं दो सा.ऐ. (4) पाठ्यक्रमों को चुनिए अथवा सभी तीन सा.ऐ. 7,8,9 (योग = 12)				प्रधान पर लघुशोधप्रबन्ध (4+2) अथवा गौण पर लघुशोधप्रबन्ध (4+2) अथवा शैक्षणिक परियोजना/ उद्यमिता (4+2)	22
आठवें समसत्र की सम्पूर्ति पर अपेक्षित 176 विश्वासमानांकों के अर्जनोपरांत नि:सरण करने वाले छात्रों को स्नातक उपाधि (बहुविषयक अध्ययन के क्षेत्र में) (प्रतिष्ठा/ शैक्षणिक परियोजना/उद्यमितासहकृत प्रतिष्ठा) से अलंकृत किया जायेगा।							**योग= 176**

* समसत्र 1, 2, 3 और 4 में क्रमशः प्रस्तावित भाषाएं 1, 2, 3 और 4 दो अलग-अलग भाषाओं के पाठ्यक्रम हैं (जिनमें से एक भारतीय भाषा होगी) जिन्हें सा.ऐ.(जीई) के रूप में प्रस्तुत की जाने वाली भाषाओं के निकाय से चुना जाना है। एक छात्र प्रत्येक भाषा के दो पाठ्यक्रमों का अध्ययन करेगा।

अनु.वि.मू.पा.(डीएससी) 1 से अनु.वि.मू.पा. (डीएससी) 6 तक अनुशासन 'अ' अथवा 'ब' के मूल पाठ्यक्रम होंगे।

यदि कोई छात्र अनुशासन अ में प्रधान करना चाहता है, तो उसे अनुशासन अ के अनु.वि.मू. (डीएससी) और अनु.वि.ऐ.(डीएसई) से कम से कम 80 विश्वासमानांक (क्रेडिट) अर्जित करना चाहिए। यदि अनुशासन अ के अनु.वि.मू.पा.(डीएससी) और अनु.वि.ऐ.(डीएसई) का कुल योग 80 विश्वासमानांक (क्रेडिट) से कम है, तो अनुशासन अ के विषय पर लिखे गए लघुशोधप्रबन्ध में अर्जित विश्वासमानांक (क्रेडिट) को भी अपेक्षित 80 विश्वासमानांक (क्रेडिट) को पूरा करने के लिए ध्यान में रखा जाएगा।

10. समापन-टिप्पणी

स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा-2022[3] पर विहंगम दृष्टिपात स्पष्टरूप से एक बहुविषयक दृष्टिकोण को सम्मुख लाता है। प्रकृत पाठ्यक्रम की रूपरेखा छात्रों/छात्राओं को अपने जीवन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शिक्षण एवं अधिगम दोनों की गुणात्मकता एवं मात्रा से कोई समझौता किए बिना उनकी आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं के अनुरूप निकास के अनेक विकल्पों से युक्त स्नातक उपाधि की परिकल्पना के परिणामस्वरूप छात्रों/छात्राओं को स्नातक स्तर पर अत्यधिक लचीलापन प्रदान करती है।

विश्वविद्यालय को स्नातक स्तर पर इस तरह के लचीले परन्तु श्रमसाध्य पाठ्यक्रम संरचना के लाभों का उपयोग करने एवं अपनी रुचि के क्षेत्र में अपने कौशल के संवर्धन के माध्यम से इसका लाभ प्राप्त करने में विद्यार्थियों की अधिकतम भागीदारी की अपेक्षा है। प्रकृत पाठ्यक्रम की रूपरेखा, अंततः उन्हें रोजगार प्राप्त करने, उद्यमशीलता, नवनिर्माण और एक सम्मानजनक जीवन के अन्य तरीके और समकालीन वैश्विक मांगों के अनुरूप तुलनीय कौशल और नवीन विचारों के साथ एक वैश्विक नागरिक के रूप में रहने में सहायता करेगी। विश्वविद्यालय को अपेक्षा है कि युवा राष्ट्र एक ओर युवा ऊर्जा का उपयोग करने के लिए कुशल जनशक्ति विकसित करने में स्ना.पा.रू (यूजीसीएफ)-2022 से अधिकतम लाभ प्राप्त करेगा और दूसरी ओर जनसांख्यिकीय लाभ लेते हुए विश्व स्तर पर कुशल कार्यबल के प्रसार का विस्तार करेगा।

11. प्रतिपुष्टि प्रपत्र

इस अनुवादकार्य में न्यूनाधिक अशुद्धियां हो सकती हैं। विद्वद्गण एवं पाठकगण यदि अशुद्धियों को हमारी जानकारी में लाएं तो यह बहुत ही उपकारी होगा एवं अशुद्धियों का तत्काल निराकरण किया जाएगा। पाठकगण अपने परामर्श ugcf.sanskrit@gmail.com ईमेल पर भेज सकते हैं।

इस प्रारूप में यदि कोई अन्तर्विरोध अथवा संशय की स्थिति उपस्थित होती है तो अंग्रेजी भाषा के प्रारूप को प्रमाण माना जाए।

[3] प्रस्तुत स्नातक पाठयक्रम की रूपरेखा (2022) को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के आलोक में तैयार किया गया है। इस रूपरेखा में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के मूल प्रपत्र से ली गई है। जो https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf पर उपलब्ध है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रकोष्ठ के सदस्य

1.	**प्रो. के. रत्नाबलि, अधिष्ठाता, शैक्षणिक गतिविधि एवं परियोजना**	**अध्यक्ष**
2.	**प्रो. पंकज अरोड़ा, शिक्षा विभाग**	**सदस्य**
3.	**प्रो. निरञ्जन कुमार, हिन्दी विभाग**	**सदस्य**
4.	**प्रो. रवि टेकचन्दानी, आधुनिक भारतीय भाषा विभाग**	**सदस्य**
5.	**प्रो. मनोज कुमार सिंह, नृविज्ञान विभाग**	**सदस्य**
6.	**प्रो. रंजन कुमार त्रिपाठी, संस्कृत विभाग**	**सदस्य**
7.	**प्रो. रमा, प्राचार्या, हंसराज महाविद्यालय**	**सदस्य**
8.	**प्रो. रविन्द्र गुप्ता, प्राचार्य, पीजीडीएवी (सांध्य) महाविद्यालय**	**सदस्य**
9.	**प्रो. पूनम वर्मा, प्राचार्या, शहीद सुखदेव वाणिज्य अध्ययन महाविद्यालय**	**सदस्य**
10.	**डॉ. मुकेश मेहलावत, उप-अधिष्ठाता (शोध)**	**सदस्य**
11.	**श्री जय चन्दा, संयुक्त-कुलसचिव (शैक्षणिक)**	**सदस्य**
12.	**श्रीमती नीरू सचदेव, सहायक-कुलसचिव (शैक्षणिक)**	**सदस्यसचिव**

11. अनुवादसमिति

1.	प्रो. रंजन कुमार त्रिपाठी, संस्कृत विभाग एवं सह-अधिष्ठाता (महाविद्यालय)	अध्यक्ष
2.	प्रो. निरञ्जन कुमार, हिन्दी विभाग	सदस्य
3.	प्रो. ओमनाथ बिमली, संस्कृत विभाग	सदस्य
4.	प्रो. भारतेन्दु पाण्डेय, संस्कृत विभाग	सदस्य
5.	प्रो. सत्यपाल सिंह, संस्कृत विभाग	सदस्य
6.	प्रो. रमा, प्राचार्य, हंसराज महाविद्यालय	सदस्य
7.	प्रो. साधना शर्मा, प्राचार्य, श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय	सदस्य
8.	प्रो. प्रत्यूष वत्सला, प्राचार्य, लक्ष्मीबाई महाविद्यालय	सदस्य
9.	डॉ. बलराम शुक्ल, संस्कृत विभाग	सदस्य
10.	डॉ. सुभाष चन्द्र, संस्कृत विभाग	सदस्य
11.	डॉ. धनञ्जय कुमार आचार्य, संस्कृत विभाग	सदस्य
12.	डॉ. राजीव रञ्जन, संस्कृत विभाग	सदस्य
13.	डॉ. अवधेश प्रताप सिंह, संस्कृत विभाग	सदस्य
14.	डॉ. मुन्ना कुमार पाण्डेय, सत्यवती महाविद्यालय	सदस्य
15.	डॉ. अजीत कुमार, संस्कृत विभाग	सदस्य